Monthly Examina...

GROWTH & DEVELOPMENT
CC-6 Seme-II

रोस्टोव का विकास की चौथी अवस्था —

(4) परिपक्वता की ओर अग्रसर अवस्था
(The Drive of Maturity)

रोस्टोव की परिभाषा के अनुसार, परिपक्वता की ओर अग्रसर अवस्था के समयावधि में समाज अपने अधिकतर साधनों पर (तत्कालीन) आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रभावयुक्त कार्य करने लगता है। यह अवस्था दीर्घ सतत (Long Sustained) आर्थिक वृद्धि की अवधि होती है। इस अवस्था में पुराना उत्पादन तकनीक का स्थान पर नई उत्पादन तकनीक कार्य करने लगता है। शुद्ध निवेश (N.In.) की दर राष्ट्रीय आय के 10% से अधिक होता है। नए-नए प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों का कार्य करना प्रारम्भ हो जाता है। इस अवस्था में कोई भी देश या क्षेत्र में मुख्यतः निम्नांकित परिवर्तन होते हैं।

(i) कार्यकारी-शक्ति की प्रकृति में परिवर्तन — लोग शहरों में रहना पसंद करते हैं, वास्तविक मजदूरी-दर बढ़ने लगती है। श्रमिक अपना संगठन बनाने लगते हैं।

(ii) उद्यमता की प्रकृति में परिवर्तन — कठोर तथा परिश्रमी मालिकों का स्थान पर सभ्य एवं विनम्र प्रबंधक होते हैं।

(iii) नवप्रवर्तन निरंतर प्रारम्भ हो जाता है।

(iv) कृषि पर जनसंख्या का दबाव कम होने लगता है, उद्योग में कार्यबल बढ़ जाता है।

(5) अत्यधिक उपभोग का युग

[THE AGE OF HIGH MASS CONSUMPTION]

यह अवस्था विकास का चरम या अंतिम अवस्था माना जाता है। टिकाऊ उपभोक्ता - वस्तुओं और घरेलू मशीन पुर्जों का अधिक प्रयोग होने लगता है। इस अवस्था में पूर्ति की अपेक्षा माँग पक्ष पर जोर अधिक दिया जाता है।

* देश या राज्य कल्याणकारी राज्य की ओर अग्रसर होकर कल्याणकारी राज्य बन जाता है।
* राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर प्रभाव बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय नीति का अनुसरण होने लगता है।
* कर लेने आरोही कराधान की ओर बढ़ने लगता है।
* नए व्यापार केन्द्र, प्रमुख उद्योग क्षेत्र, टिकाऊ उपभोग वस्तुओं की माँग में वृद्धि होने लगती है।

आर्थिक वृद्धि की अवस्थाओं की आलोचनाएं

(CRITICISMS OF THE STAGES OF GROWTH)

प्रो० हबाकुक ने रोस्टोव की अवस्था के बारे में लिखा है कि " रोस्टोव की कृति निश्चय ही वर्गीकरण का निबंध है जिसमे इस संबंध में कुछ विचार है कि किस प्रकार एक अवस्था अगली अवस्था पर चली जाती है परन्तु इसमें कोई सामंजस्य नही स्थापित होता जिसे उत्पादन या वृद्धि के सिद्धान्त के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सके।

* अर्थशास्त्रियो का कहना है कि रोस्टोव की विकास की अवधारणाओ का जो वर्गीकरण किया है वह अवैज्ञानिक है।

* रोस्टोव ने ऐसा कोई मापदंड नही बताया है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि कौन सी अवस्था पहले समाप्त हो गयी तथा दूसरी प्रारम्भ हो जायेगी।

* सभी अवस्थाओ से गुजरना राष्ट्र को गुजरना आवश्यक नही है क्योकि हर देश कि स्थिति अलग होती है। विकास देश के भौगोलिक सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियो पर भी निर्भर करता है।

* महत्व → अल्पविकसित देशो के औद्योगिकरण के लिए उत्कृष का सिद्धान्त बहुत ही उपयुक्त है। उत्कृष की तीनो आवश्यक शर्तो में से पहली दो, राष्ट्रीय आय के 10% से ऊपर पूँजी निर्माण तथा एक या अधिक प्रमुख क्षेत्रो का विकास, अल्पविकसित देशो के औद्योगिकरण की प्रक्रिया मे सहायक है। तीसरी शर्त जहाँ मौद्रिक तथा राजनैतिक संस्थाएं और प्रौद्योगिकी तथा कुशलता एक निश्चित स्तर पर होना अल्पविकसित देशो को अपने विकास हेतु ध्यान दिलाते है कि वे इन्हे विकसित करें।